माधवरावसप्रेजी विलक्षण प्रतिभा के धनी थे। वे न केवल एक पत्रकार अपितु एक कुशल संपादक, अप्रतिम लेखक, प्रकाशक, निबंधकार, अनुवादक, समालोचक आदि सब कुछ थे। छत्तीसगढ़ जैसे पिछड़े हुए क्षेत्र को और यहाँ के जनमानस को वैचारिक चिंतन व स्वतंत्रता के भाव को आत्मसात करवाने की प्रक्रिया का प्रारंभ, माधवरावसप्रे की प्रेरणा व उनके अथक प्रयासों का ही परिणाम था। तत्कालीन समय में भारत वर्ष न केवल बाहरी पराधीनता के अधीन था, अपितु स्वंम भारतीय समाज भी कुछ आंतरिक पराधीनता से ग्रस्त था जिसके फलस्वरुप भारतीय समाज की प्रगति रुक गई थी। माधवरावसप्रे की सजगता, भारतीय राष्ट्रीयता को प्रभावित करने वाले प्रत्येक कारक पर संपूर्ण रुप से व्याप्त थी। जनमानस की सुप्त चेतना को जागृत करने के लिए, सत्य को साहस के साथ सभी के समक्ष प्रस्तुत करने के गुण ने माधवरावसप्रे को एक अलग ही विशिष्टता प्रदान की। माधवरावसप्रे का मानना था कि राष्ट्रसेवा का कार्यपत्रकारिता के माध्यम से किया जा सकता है, इस कारण से उन्होंने १९०० ई. में' छत्तीसगढ़मित्र' नामक पत्रिका का प्रकाशन कर अपने कार्य की शुरुआत की।

अध्ययन का महत्व-

इतिहास के क्षेत्र में, ऐसे अनेक महापुरुष हुए हैं जिन्होंने व्यक्तिगत स्वार्थ की तिलांजलि देकर राष्ट्र हित को सर्वोपरि माना और अपना संपूर्ण जीवन राष्ट्र को समर्पित कर दिया। आंचलिक या क्षेत्रीय इतिहास का अपना महत्व होता है और इसे नकारा नही जा सकता, आवश्यकता इस बात की होती है कि उन महापुरुषों के कार्यो, जिनका राष्ट्रीय महत्व है उसे उद्घाटित किया जाए। प्रस्तुत शोध से यह स्पष्ट होगा कि पत्रकारिता के माध्यम से माधवरावसप्रेजी ने छत्तीसगढ़ प्रदेश में राजनैतिक जागरुकता व राष्ट्रीयता के विकास में अग्रणी भूमिका का कुशल निर्वाहन कियाहै।

अध्ययन का उद्देश्य -

प्रस्तावित शोध अध्ययन के निम्नांकित उद्देश्य हैं-

- छत्तीसगढ़ की पत्रकारिता में माधवरावसप्रे का योगदान।

- माधवरावसप्रे के सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक चिंतन की जानकारी प्रदान करना।

पूर्वसाहित्य की समीक्षा -

विजयदत्त श्रीधर (२०२१) ने अपने अध्ययन में बताया कि छत्तीसगढ़ में पत्रकारिता का प्रारंभ माधवरावसप्रे के योगदान का ही परिणाम था। सप्रेजी हिन्दी नवजागरण के पुरोधा थे। सप्रेजी ने भारत की एक राष्ट्रीयता का शंखनाद किया। सप्रेजी ने हिन्दी पत्रकारिता और पत्रकारों को संस्कार प्रदान किए। सप्रेजी ने हिन्दी समालोचना का शास्त्र विकसित किया।

ये एक ऐसा नायक था जो एक साथ इतने मोर्चो पर सक्रिय रहता था।

डॉ. मंगला अनुजा (२०१८) के अनुसार भारतीय पत्रकारिता के लिए फिरंगी हुकूमत का दौर भीषण संघर्ष का काल रहा है। तब प्रतिबंध और प्रताड़ना ही पत्रकारिता के पुरस्करण थे। सप्रेजी की साहित्य, भाषा और पत्रकारिता के प्रति अपनी मौलिक आस्था थी। वे यह समझते थे कि छत्तीसगढ़ क्षेत्र से साहित्यिक पत्र निकाल कर जीवित रखना आसान न होगा। फिर भी उनहोंने छत्तीसगढ़ मित्र के स्वरुप में परिवर्तन नही किया। उनका मानना था कि पत्रकारिता जहाँ जितनी व्यापक होती है, वहाँ जनता में अधिक से अधिक चैतन्यता आती है।

विभाष कुमार झा (२०११) का मत है कि पं. माधवरावसप्रेजी, जिस दौर में पत्रकार रहे हों, वह दौर भला कैसे साधारण हो सकता है। सच तो यह है कि इनके बनाए मार्ग पर चल कर ही छत्तीसगढ़ में हिन्दी पत्रकारिता ने भाषा, साहित्य और विचार की दृष्टि से एक श्रेष्ठ स्तर को स्पर्श किया है। आजादी से पहले छत्तीसगढ़ में जितने भी समाचार पत्र प्रकाशित हुए उनके सामने संसाधनों का संकट निरंतर बना रहा। आर्थिक समस्या के कारण अधिकांश पत्रों के अंक भी अनियमित रहे। किंतु इन पत्रों से छत्तीसगढ़ में हिंदी पत्रकारिता को एक मजबूत आधार अवश्य मिला।

शोध प्रविधि -

प्रस्तुत शोध अध्ययन की विधि गुणात्मक है। तथ्य एकत्रण हेतु प्राथमिक एवं द्वितीयक ड्रोतों का उपयोग किया गया है। प्राथमिकड्रोत के रुप में माधवरावसप्रे स्मृति समाचार पत्र संग्रहालय एवं शोध संस्थान, भोपाल में सुरक्षित रखे गये मूल समाचार पत्र व पत्रिकाऐं द्वारा संकलित तथ्य व द्वितीयक ड्रोत के रुप में विभिन्न ग्रंथालयों, शोध विषय से संबंधित लेखों, समाचार पत्र-पत्रिकाओं और पूर्व मे किये गये शोध कार्यों को आधार बना कर तथ्यों के संकलन का कार्य किया गया है।

शोध परिकल्पना-

परिकल्पना अनुसंधान की दिशा स्पष्ट करती है। इस शोध पत्र की उपकल्पना निम्नहै-

-छत्तीसगढ़ में पत्रकारिता के उद्भव में माधवरावसप्रेजी का स्थान सर्वोपरि है।

-भारतीय स्वाधीनता संग्राम के दौरान छत्तीसगढ़ प्रदेश में राष्ट्रीयता एवं राजनैतिक जागरुकता लाने के कार्य में माधवरावसप्रेजी का विशिष्ट स्थान है।

मध्यप्रदेश के दमोह जिले के पथरिया गाँव में १९ जून १८७१ को माधवरावसप्रे का जन्म हुआ। प्रारंभिक शिक्षा में ही उनकी मेघा का परिचय मिलने लगा था। उन्हें पढ़ने के लिए छात्रवृत्ति मिलती रही और वे पायदान चढ़ते गए। सन १८९८ में बी. ए. की उपाधि अर्जित की, जो उन दिनों बड़ी बात

मानी जाती थी। ऊँचे सरकारी ओहदे पाने की कुँजी भी थी। नौकरी के ऐसे प्रस्ताव मिले भी, परन्तु सप्रेजी को फिरंगी हुकूमत की नौकरी करनी ही नही थी। वे 'केसरी' संपादक लोकमान्य बालगंगाधर तिलक को पढ़ते और गुनते हुए बड़े हुए थे। सन १८९९ में उन्होंने पेण्ड्रा के राजकुमार के ट्यूटर की जिम्मेदारी स्वीकार कर ली।

पचास रुपये महीने के अल्प वेतन में भी बचत करते हुए जनवरी, १९०० में मासिक पत्र 'छत्तीसगढ मित्र' का प्रकाशन आरंभ कर दिया। उनके संकल्पों की इस पहली उड़ान में सहयोगी बने वामनबली रामलाखे और पं. रामरावचिंचोल कर। पहले पहल दक्षिण कोसल को 'छत्तीसगढ की संज्ञा देने वाले सप्रेजी ने शिक्षा का प्रसार, हिन्दी भाषा का उन्नयन, साहित्य का संस्कार आदि उद्देश्यों के लिए 'छत्तीसगढमित्र' का प्रकाशन किया था। पाठकों की जानकारी बढ़ाने वाले और मानसिकतन्द्रा को झकझोरने वाले वैचारिक निबंधों ने 'छत्तीसगढमित्र' का महत्व स्थापित किया।' विजयदत्तश्रीधर (२०२१:१४)४

'छत्तीसगढमित्र के प्रकाशन को हिन्दी जगत ने भरपूर सराहा। इसकी प्रतियां जब देश के हिन्दी समाचारपत्रों के संपादकों और लेखकों तथा सप्रेजी के परिचित मित्रों और गुरुजनों को प्राप्त हुई तब सप्रेजी के पास मित्र सराहना में अनेक पत्र प्राप्त हुए। एक वर्ष की कड़ी मेहनत ने छत्तीसगढमित्र को हिन्दी जगत में स्थापित तो कर दिया परन्तु उसके संचालन में जो व्यय हो रहा था उसकी पूर्ति नही हो पा रही थी। तब भी हितैषी उसके दीर्घ जीवन की कामना कर रहे थे और सलाह दे रहे थे कि उसकी समयावधि मासिक से कम की जाए।' संतोषकुमार शुक्ल (१९९६:१२)५ माधवरावसप्रे अपने विचारों में अडिग थें क्योंकि उनके स्वप्न तत्कालीन समय से कहीं आगे के थे। जो संघर्ष सप्रेजी ने इस पत्र को अनवरत प्रकाशित होने रहने के लिए किया, वो संघर्ष अपने आप में अद्भुत, अकल्पनीय व अवर्णनीय है।

उन्हें इस बात का पूर्ण रुप से अहसास था कि इस पत्र के कलेवर में परिवर्तन किए बिना इसे निरंतरता प्रदान कर पाना अधिक समय तक संभव नही हो पाएगा फिर भी सप्रेजी ने अपनी मौलिकता का त्याग नही किया। 'अपने जीवन के तीसरे वर्ष भर छत्तीसगढ मित्र ने अपने अस्तित्व के लिए लड़ाई लड़ी। सप्रेजी ने अपना कार्य समेटना प्रारंभ कर दिया। जो लेखादि पूरे कर ना था उहें अगले अंकों में समाप्त किया और भारी मन से तृतीय वर्ष के अंतिम अंक में हमारी अंतिम सूचना के साथ इस युगान्तरकारी पत्र का प्रकाशन बंद करने की घोषणा कर दी।

सप्रेजी और उनके साथियों का विशाल हृदय था। छत्तीसगढ मित्र का प्रकाशन बंद होने का दोष उन्होनें किसी पर ना डालते हुए सारा दोष स्वंम पर लेते हुए लिखा-छत्तीसगढमित्र के बंद होने का दोष किसी एक व्यक्ति पर नही है, किन्तु यह दोष स्वंम उस पत्र का ही है कि जो तीन वर्ष में भी भारत

के भाषा प्रेमियों के हृदय में स्वार्थ त्याग के भाव को इतना जागृत न कर सका कि जिससे वह अपने जीवन को चिरस्थायी बनाने में समर्थ होता।' विजयदत्त श्रीधर (१९९९:५१)६

वर्ष १९०५ तक भारतीय राजनीति पर बालगंगाधर तिलक का प्रभाव स्पष्ट रुप से बढ़ चुका था और तिलक को अपनी प्रेरणा आधार बनाकर व तिलक के विचारों को जनमान सतक प्रसारित करने के लिए सप्रेजी ने १९०७ ई॰ को केसरी पत्र के हिन्दी अनुवाद के रुप में 'हिन्दी केसरी' पत्र निकालना प्रारंभ किया। 'सप्रेजी ने हिंदी ग्रंथ माला और हिंदी केसरी के माध्यम से भी अपने विचारों को, जो कि जनमानस को राष्ट्रीयता के भाव से, अनुभूत कगाते थे, प्रसारित व प्रचारित किया। सप्रेजी ने तत्कालीन समग्र विषयों पर अपनी लेखनी का प्रभाव दिखाया। 'हिंदी केसरी की उत्कट राष्ट्र भक्ति तथा चेतना से अंग्रेजी सरकार क्षुब्ध हुई और अगस्त सन् १९०८ में सप्रेजी राज्य विरोधी लेख प्रकाशित करने के आरोप में गिरफ्तार किये गये।'

डॉ. गीतेश कुमार अमरोहित (२०२१:२०२) हिन्दी केसरी के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए संपादक सप्रे ने आर्य माता राजनैतिक दासत्व से मुक्त होकर स्वराज्य का सुखकारी मुकुट अपने मस्तक पर धारण करेंगी और इसी में हिन्दी केसरी की सार्थकता है, यह निरुपित किया था। जागेशचंद्र बागल (१९५३:६३)८ जिस अग्निपथ पर माधवरावसप्रे चल रहे थे, उसके परिणामों से वे अवगत थे। उन्हें ज्ञात था कि उनके इस दुस्साहस की परिणति कारावास यात्रा में होगी तथापि लोकमान्य तिलक का आशीर्वाद आश्रय उनके भीतर निरन्तर साहस की चेतना जगाता जा रहा था। कैलाश नारद (१९८४:६७)९

सप्रेजी की गिरफ्तारी से एक शून्यता की स्थिति बन गई। सप्रेजी ने हिंदी ग्रंथ माला और हिंदी केसरी के माध्यम जो कार्य करना शुरु किया था, अब उस कार्य को उसी योग्यता के साथ आगे बढ़ाना था। इन परिस्थितियों में सप्रेजी पर दबाव बनाया गया कि वे ब्रिटिश सरकार से माफी मांग लें परन्तु यह बात कहने में जितनी आसान थी, करने में उतनी ही असंभव के करीब। सप्रेजी ने जबकिसी की बात नही तब उनके बड़ेभाई ने माफीनामे पर हस्ताक्षर न करने पर आत्महत्या कर लेने की बात कही, इस परिस्थिति में बहुत भारीमन से, बड़ी मजबूरी के साथ सप्रेजी ने माफीनामे पर हस्ताक्षर कर दिए। सप्रेजी के इस कार्य की निंदा भी हुई और आलोचना भी।

'जब हिन्दी केसरी में ही सप्रेजी के बारे में लज्जित होने की भावना प्रदर्शित की गई तब देश के अन्य भागों के हिन्दी पत्रों में इस दुर्घटना के प्रतिक्षोभ और निराशा के उद्गार प्रकट होना स्वाभाविक था। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि हिन्दी केसरी में कितनी स्पष्टवादिता थी। बिना लागलगाव के हिन्दी केसरी ने सार्वजनिक सोच के भावों को ज्यों का त्यों रख दिया।' संतोषकुमार शुक्ल (१९९६:४७)१० ०३ नवंबर १९०८ कोग्रानि में डूबे सप्रेजी जब रिहा हुए तो राष्ट्रवादियों ने उनके द्वारा लिखे गए क्षमा

पत्र को अपना अपमानमान कर रायपुर की जनता में उनके चित्र व प्रतीक पुतले जलाये। स्वंम सप्रेजी को इतनी ग्लानि हुई कि कुछ दिनों तकवे घर से बाहर निकले ही नही, और मधुकरी मांग कर, उसी से जीवन यापन करते रहे, इस प्रकार उन्होंने अपने कृत्य का प्रायश्चित किया था।' प्रयागदत्त शुक्ल (१९५९ः१००)११ क्षमा मांग लेने की आत्मग्लानि को सहन करना अत्यंत ही कठिन कार्य होता है, सप्रेजी ने अपने व्यथित मन को शांत करने के लिए वर्धा चले गए। सप्रेजी साहसी प्रवृत्ति के व्यक्ति थे, उन्होंने निश्चय किया कि अब वे मधुकरी वहां मांगेंगे जहां लोग उन्हें जानते हों और इस विचार के साथवे १९०९ में रायपुर आ गए। पारिवारिक क्लेश के बावजूद सप्रेजी ने १३ माह तक मधुकरी मांग कर जीवन बिताया।

इस दौर में सप्रेजी ने एक ओर जहाँ पश्चाताप की साधना का द्रष्टान्तरचा, वहीं उत्तम पुस्तकों का अनुवाद कर हिन्दी साहित्य की श्री वृद्धि की। दुनिया के उच्च स्तरीय साहित्य का अनुवाद हो और भारतीय भाषाओं के साहित्य के बीच आदान प्रदान बढ़े, यह सप्रेजी की कार्य योजना का महत्वपूर्ण बिन्दु रहा है। विजयदत्तश्रीधर (२०२१ः१७)१२ अपने इस अज्ञातवास के दौरान ही उन्होंने प्रसिद्ध संत रामदास के ग्रंथदास बोध का मराठी से हिन्दी अनुवाद, रामचरित्र एवं एकनाथ चरित्र की रचना का कार्य भी किया। रामगोपाल शर्मा (१९९४ः५८)१३ सप्रेजी रायपुर में दो.ढाई वर्ष रह कर आध्यात्मिक अभ्यास, सामाजिक सेवा और भगवत भजन में अपना समय व्यतीत करते हुए स्वतंत्र साहित्य सेवा में लगे रहे। इसी बीच में 'दासबोध', 'शालोपयोगी भारत वर्ष 'आत्मविद्या',समर्थस्वामीरामदास का विस्तृत जीवन चरित्र, हिन्दी मेघदूत, भारतीय युद्ध इत्यादि ग्रंथ तैयार किए और सरस्वती आदिमासिक पत्रिकाओं में लेख भी देते रहे। संतोषकुमार शुक्ल (१९९६ः६४)१४ सप्रेजी ने भारतीय समाज में जो बुराइयां व्याप्त थी उन पर भी कड़ा प्रहार किया। वे समतामूलक समाज के हितैषी थे, वे एक ऐसा समाज बनाना चाहते थे जहां स्त्री और पुरुष दोनों को ही समान अधिकार प्राप्त हों। उनका मानना था कि किसी भी राष्ट्र की उन्नति तभी संभव हो पाती है जब उस राष्ट्र की स्त्रियों की उन्नति हो। 'सप्रेजी का मानना था कि जब तक महिलाएं और बालिकाएं शिक्षित नही होंगी तब तक समाज की उन्नति नही होगी।

अतः उन्होंने अपने अनन्य मित्र पं. बलीरामलाखे के नेतृत्व में रायपुर में श्रीजानकी देवी महिला पाठशाला की स्थापना ८ जनवरी १९११ कोकी। रायपुर की इस पाठशाला के प्रधान व्यवस्थापक सप्रेजी ही थे।' संतोषकुमार शुक्ल (१९९६ः६४)१५ सप्रेजी के जीवन में उपरोक्त घटनाओं का गहरा प्रभाव पड़ा, उन्होंने लेखन व अनुवाद का कार्य तो जारी रखा परन्तु सार्वजनिक जीवन से स्वंम को विमुख कर लिया। पर यह क्रम भी टूटना ही था क्योंकि आत्मग्लानि,मन और आत्मा में बसी हुई देशभक्ति के भाव को सदैव के लिए समाप्त नही कर सकती थी। वर्ष १९१६ में सप्रेजी का सार्वजनिक जीवन में पुनः पर्दापण हुआ जब वे हिन्दी साहित्य सम्मेलन के जबलपुर अधिवेशन में शामिल हुए। एक बार पुनः उन्होंने अपनी

ओजस्वी वाणी का परिचय दिया और इस बार उनका ध्येय भारत मे शिक्षा का माध्यम देशी भाषा हो, इस पर केन्द्रित रहा। 'गांधी युग की लहर समूचे देश में चल रही थी। इसी लहर में पं. माधवरावसप्रे, पं. विष्णुदत्त शुक्ल और ठाकुर छेदीलाल सिंह ने जबलपुर में राष्ट्र सेवा लिमिटेड की स्थापना की। राष्ट्र सेवा लिमिटेड ने १७ जनवरी १९२० को साप्ताहिक कर्मवीर का प्रकाशन किया। सप्रेजी ने संपादक के पद पर, १९०८ में हिन्दी केसरी द्वारा आयोजित निबंध प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार पानेवाले पं. माखनलाल चतुर्वेदी को आमंत्रित किया, क्योंकि वे स्वंम कर्मवीर में संपादक के रुप में अपना नाम प्रकाशित नही करना चाहते थे।' डॉ. मंगला अनुजा (२०१८:२३४)१६ हिन्दी साहित्य सम्मेलन का देहगदून अधिवेशन (१९२४) सप्रेजी के जीवन का कदाचित् अंतिम बड़ा सोपान था। इसकी अध्यक्षता पं. माधवरावसप्रे ने की थी। हिन्दी की राष्ट्रीय मेघा ने सप्रेजी को विवश कर दिया था कि वे मंच पर नहीं आने का संकल्प तोड़ें। यहाँ भी सप्रेजी ने अपनी राष्ट्रवादी सोच और भंगिमा प्रकट की। आपने हिन्दी को राष्ट्रभाषा के पद पर प्रतिष्ठित करने का आह्वान किया और इसे राष्ट्रीय एकता की दिशा में महत्वपूर्ण कदम निरुपित किया। विजयदत्तश्रीधर (२०२१:१८)१७ सप्रेजी का व्यक्तित्व राष्ट्रहित का अनुगामी था, इस पथ पर आई कठिन से कठिन बाधाओं ने भी, सप्रेजी को और भी अधिक उर्जावान व कर्मठ ही बनाने में योगदान दिया। परन्तु पत्रकारिता के इस प्रकाशपुंज ने बहुत ही कम उम्र में, २३ अप्रैल १९२६ को इस संसार से बिदाई लेली।

शोध परिकल्पना का परीक्षण-

उपरोक्त अध्ययन के उपरांत हमारी उपकल्पना सत्य साबित होती है जो कि निम्न है-

- छत्तीसगढ़ में पत्रकारिता के उद्भव में माधवरावसप्रेजी का स्थान सर्वोपरि है।

- भारतीय स्वाधीनता संग्राम के दौरान छत्तीसगढ़ प्रदेश में राष्ट्रीयता एवं राजनैतिक जागरुकता लाने के कार्य में माधवरावसप्रेजी का विशिष्ट स्थान है।

माधवरावसप्रेजी ने जब भी अपनी लेखनी का प्रयोग किया तो उसका सर्वप्रथम उद्देश्य भारत के जनमानस के विचारों को राष्ट्रहित के भावों से परिपूर्ण करने का रहा। देश और समाज की उन्नति ही उनके लेखन का मूल आधार रही। 'माधवरावसप्रे ने मध्यप्रदेश में किसी भी धारा का नेतृत्व ग्रहण नही किया। उन्होंने राजनीति, पत्रकारिता और साहित्य के क्षेत्र में नेताओं का निर्माण अवश्य किया। उनका मूल्यांकन सम्भव नही है। वह इतिहास की वस्तु हो गई है। उन्होंने देश और भाषा के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। अपनी योग्यता के आधार पर वे सम्पत्ति अर्जित कर सकते थे, उसके लिए स्वर्णिम अवसर भी थे लेकिन उन्होंने प्रलोभन का तिरस्कार किया और पत्रकारिता तथा साहित्य के लिये अपने स्वास्थ्य को होम कर दिया। उनका वैयक्तिक जीवन शून्य हो गया था और भाषा तथा शब्दों को ही उन्होंने

अपना जीवन बना लिया था। उनकी कहानी तत्कालीन स्वाधीनता आंदोलन में तिल तिल चेतना जलाने वाले उन बलि पुत्रों की कथा है जिन्होंने यज्ञ और कीर्ति की लिप्सा से मुक्त होकर देश को अपना जीवन दे डाला।' कैलाशनारद (१९८४:६९)१८

संदर्भग्रंथसूची-

1. श्रीधर विजयदत्त सं. (२०२१), *माधवराव सप्रेसार्ध्द शती स्मारक ग्रंथ,*माधवरावसप्रे स्मृति समाचार पत्र संग्रहालय एवं शोध संस्थान, भोपाल।
2. अनुजा डॉ. मंगला (२०१८), *भारतीय पत्रकारिता नींव के पत्थर,* मध्यप्रदेश॰ राज्य हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल।
3. झा विभाष कुमार (२०११),*हिन्दी पत्रकारिता का इतिहास छत्तीसगढ़,* छत्तीसगढ़ राज्य हिंदी ग्रंथ अकादमी, रायपुर.
4. श्रीधर विजयदत्त सं. (२०२१), *माधवराव सप्रेसार्ध्द शती स्मारक ग्रंथ,*माधवरावसप्रे स्मृति समाचार पत्र संग्रहालय एवं शोध संस्थान, भोपाल, पृष्ठ - १४.
5. शुक्ल, संतोषकुमार, (१९९६), *माधवरावसप्रे व्यक्तित्व एवं कृतित्व,* मध्यप्रदेश॰ हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, पृष्ठ - १२
6. श्रीधर विजयदत्त सं. (१९९९), *शब्दसत्ता मध्यप्रदेश में पत्रकारिता के १५० साल,* माधवरावसप्रे स्मृति समाचारपत्र संग्रहालय एवं शोध संस्थान, भोपाल, पृष्ठ - ५१.
7. अमरोहित डॉ. गीतेश कुमार, (२०२१),*छत्तीसगढ़ कला एवंसंस्कृति,* सरस्वती बुक्स, दुर्ग, पृष्ठ-२०२
8. बागल जागेशचंद्र (१९५३), *हिस्ट्रीऑफ द इंडियन एसोसिएशन*, इंडियन एसोसिएशन, कलकत्ता, पृष्ठ-६३
9. नारद कैलाश (१९८४), *मध्यप्रदेश मे हिन्दी पत्रकारिता एक शताब्दी,* विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, पृष्ठ - ६७
10. शुक्ल, संतोषकुमार, (१९९६), *माधवरावसप्रे व्यक्तित्व एवं कृतित्व,* मध्यप्रदेश॰ हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, पृष्ठ - ४७
11. शुक्ल प्रयागदत्त (१९५९), *क्रांति के चरण,* लोक चेतना प्रकाशन, जबलपुर, पृष्ठ - १००

12. श्रीधर विजयदत्त सं. (२०२१), *माधवराव सप्रेसार्ध्द शती स्मारक ग्रंथ*,माधवरावसप्रे स्मृति समाचार पत्र संग्रहालय एवं शोध संस्थान, भोपाल, पृष्ठ - १७

13. शर्मा रामगोपाल, (१९९४) *छत्तीसगढ़ के रायपुर जिले में स्वतंत्रता संग्राम आंदोलन*, श्री सांई प्रकाशन, धमतरी, पृष्ठ- ५८

14. शुक्ल, संतोषकुमार, (१९९६), *माधवरावसप्रे व्यक्तित्व एवं कृतित्व*, मध्यप्रदेश॰ हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, पृष्ठ - ६४

15. वही, पृष्ठ - ६५

16. अनुजा डॉ. मंगला (२०१८), *भारतीय पत्रकारिता नींव के पत्थर*, मध्यप्रदेश॰ राज्य हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, पृष्ठ - २३४

17. श्रीधर विजयदत्त सं. (२०२१), *माधवराव सप्रेसार्ध्द शती स्मारक ग्रंथ*, माधवरावसप्रे स्मृति समाचार पत्र संग्रहालय एवं शोध संस्थान, भोपाल, पृष्ठ - १८

18. नारद कैलाश (१९८४), *मध्यप्रदेश मे हिन्दी पत्रकारिता एक शताब्दी*, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, पृष्ठ - ६९